आखर हिंदी पत्रिका; e-ISSN-2583-0597 खंड 1/अंक 2/दिसंबर 2021
Received:23\11\2021; Revised: 6\12\2021; Accepted:13\12\2021; Published:24\12\2021

दास साहित्य को पुरंदरदास जी का योगदान

रामकृष्ण के.एस
हिंदी सहायक प्राध्यापक
सरकारी प्रथम दर्जा कॉलेज, सुल्या, दक्षिण कन्नड , कर्नाटक 574239
e-mail: ramakrishnay86@gmail.com
Mob: 9845392610

डॉ.रमकृष्ण के.एस, दास साहित्य को पुरंदरदासजी का योगदान,आखर हिंदी पत्रिका, खंड 1/अंक 2/दिसंबर 2021,(158-161)

प्रस्तावना: पंद्रहवीं एवं सोलहवीं शताब्दी में कई संत एवं संत कवियों के उदय के साथ भक्ति साहित्य की समृद्धि होने लगी। उनमें बंगाल में गौरांग प्रभु, महाराष्ट्र में संत तुकाराम, राजस्थान में मीराबाई, उत्तर प्रदेश में गोस्वामी तुलसीदास, तमिलनाडू में त्यागराज आदि हस्तियों की तरह कर्नाटक में श्री पुरंदरदास जी का उदय हुआ।

पुरंदरदास जी के जन्मकाल से संबंधित कई मत प्रचलित हैं। दिवाणजी ने पुरंदरदास जी का जीवनकाल 1480 ई. से 1565 ई. कहा है। के. संपद्विरिराव के अनुसार पुरंदरदास जी का जन्म महाराष्ट्र राज्य के पुणे के समीप पुरंदरगढ़ नामक गाँव में हुआ था। 'पुरंदरदासरवरेगिन हरिदास साहित्य' (पुरंदरदास जी तक का हरिदास साहित्य) नामक एक लेख में पुरंदरदास जी के जन्म स्थान को महाराष्ट्र के पुरंदरगढ़ नहीं माना है। उसमें स्पष्ट किया है कि उस काल में, उस स्थान पर कन्नड भाषा और कन्नड संस्कृति का विकास न के बराबर था| कपटराल कृष्णराय जी के शोधानुसार पुरंदरदास जी का जन्म स्थान कर्नाटक राज्य के शिवमोग्गा ज़िले के तीर्थहल्ली तहसील के नज़दीक 'अरगा' नामक गाँव है।

पुरंदरदास जी का प्रारंभिक जीवन: पुरंदरदास के प्रारंभिक जीवन के बारे में जानने के लिए ऐतिहासिक सामग्री की कमी होने के कारण उनके द्वारा लिखित कीर्तनों/पदों को आधार बनाया जा सकता है। कृति के अध्ययन के द्वारा कर्तृ तक पहुँचने का प्रयास करना पडा है। बेल्लारी ज़िले के कमलापुर(कंपली) में एक ताँबे का

शिलालेख प्राप्त हुआ है। इसका काल 1526 ई. है। पुरंदरदास के जीवन से संबंधित प्रथम एवं अब तक का अंतिम शिलालेख यही है।

पुरंदरदास के पिता का नाम वरदप्पा नायक और माता का नाम लक्ष्मक्का था। इन्होंने बचपन में ही शास्त्रों का अध्ययन किया था। ये भी अपने पिता की तरह अच्छे व्यापारी थे। अपनी अगाध संपत्ति के कारण ' नवकोटि नारायण'(नौ करोड का स्वामी) की उपाधि पायी थी।

जनश्रुति के अनुसार तीस वर्ष की आयु में ही विरक्त बनकर दास के रूप में घर से निकले। अपनी सारी संपत्ति दान में देकर घर –बार छोडकर चले गए। पत्नी की वजह से उनका मन परिवर्तित हो गया था।

पांडुरंग का कीर्तन करते- करते चारण का जीवन व्यतीत करने लगे। वे घूमते –घूमते ऋषि व्यासतीर्थ/व्यासराय के पास गये। ये माधव दर्शन के मुख्य समर्थकों में एक थे। गुरु-शिष्य का सम्मिलन हंपी में हुआ। 1525 ईं में गुरु व्यासराय ने श्रीनिवास नायक को दीक्षा देकर 'पुरंदरदास' नामकरण किया । श्री व्यासराय जी के दासकूट के सभी शिष्यों में पुरंदरदास अद्वितीय बन गए।

पुरंदरदास की रचनाएँ: पुरंदरदास द्वारा रचित सभी कीर्तनों का संग्रह विजयदास जी(1682 ईं -1755 ईं) ने किया है। पुरंदरदास जी की जीवनी को पहली बार तैयार करने का श्रेय भी इन्हीं को जाता है।

पुरंदरदास की अधिकांश रचनाएँ कन्नड में हैं और कुछ संस्कृत में भी हैं। इनका अंकित नाम पुरंदर विट्ठल है। उनकी रचनाओं में भाव, राग और लय का अद्भुत संयोजन है। संस्कृत साहित्य में जो स्थान वाल्मीकी को प्राप्त है, वही स्थान कन्नड साहित्य में पुरंदरदास को प्राप्त है।

संगीत क्षेत्र में शीर्ष पर रहे श्री त्यागराज ने 'प्रह्लाद भक्त विजय' नामक एक संगीत रूपक में पुरंदरदास के बारे में तेलुगु भाषा में कुछ इस प्रकार लिखा है। "दुरितव्रातमुल्लेनु बदिमार्चेड हरिणूणमुल बाँडु चुन पुडन बरावशु डैवेलयलु पुरंदरदासुनि महिम मुलनु दल चेदमदिलोनु" इसका तात्पर्य है – "राग के मूल स्वरूप को जानने, हर एक राग के अंतरंग का परिचय पाने इच्छुक लोगों के लिए पुरंदरदास जी के कीर्तन सुनने के अतिरिक्त कोई दूसरी पद्धति नहीं है"।

गुरुदेव रानडे जी पुरंदरदास के बारे में इस प्रकार कहते हैं –" Purandaradasa was a great saint of India. He is not merely saint of Karnataka but of the whole India".

ताल्लपाकम अन्नमाचार्य का पोता चिन्न तिरुवेंगलनाथ नामक एक तेलुगु कवि ने एक निबंध में लिखा है कि पुरंदरदास और अन्नमाचार्य की मुलाकात तिरुमल-तिरुपति मंदिर में यदा –कदा होती रहती थी। दोनों के बीच में बडा आदर –सम्मान था।

पुरंदरदास जी के मरणोपरांत लगभग एक सौ साल बाद प्रसन्न वेंकटदास (1680 ई से 1752), जगन्नाथ दास (1637ई से 1735ई) ने अपने पदों में पुरंदरदास जी की महिमा का गान किया है।

अपने अन्य शिष्यों के साथ पुरंदरदास की तुलना करते हुए व्यासराय जी ने कहा है कि' दासरेंदरे पुरंदरदासरय्या' पुरंदरदास पर रचित व्यासस्तुति में भी व्यास राय जी ने लिखा है कि 'कीर्तन पद्धति का उद्धार करनेवाले, विविध मतों के बीच का वैर भाव दूर करनेवाले, कन्नड भाषा, संस्कृति एवं संगीत शास्त्र का उद्धार करनेवाले पुरंदरदास है'।

ख़ुद पुरंदरदास जी ने ही अपने एक पद में बताया है कि गुरु व्यासराय की कृपा से उन्होंने चार लाख पच्चीस हज़ार पदों की रचना की है। लेकिन दौर्भाग्य की बात है कि आज हमें प्राप्त पदों की संख्या एक हज़ार से कम है।

कर्नाटक संगीत को पुरंदरदास जी की देन: कर्नाटक संगीत परंपरा में सबसे पहला नाम पुरंदरदास जी का ही आता है। उन्हें कर्नाटक संगीत के पितामह नाम से जाना जाता है।

कर्नाटक संगीत सीखनेवाले छात्र इनके द्वारा लिखित लंबोदर लकुमिकर, कुंदगौर गौरीवर, केरेय नीरनु केरेगे चेल्ली, पदुमनाभ परमपुरुषा आदि से ही अपना पाठ शुरु करते हैं।

पुरंदरदास जी ने संगीत क्षेत्र को एक अभूतपूर्व देन दी है। उसमें भी संगीत की प्रारंभिक शिक्षा को दृष्टि में रखकर षड्ज, पंचम, मध्यम को चतुश्रुति का अंतर रखकर मायामालवगौला को आदि राग की संज्ञा दी है। साथ ही साथ स्वरावली, जंटि वरसे, अलंकार और मायामालवगौला में जन्य मलहरि राग में गीतों की रचना की है। आज भी कर्नाटक संगीत की शिक्षा पुरंदरदास द्वारा लगाई गई बुनियाद पर टिकी हुई है। इन्होंने सरल कीर्तनों/गीतों के साथ-साथ कठिन सुलादियों की रचनाएँ भी की हैं।

उपसंहार: दास साहित्य का उद्गम नरहरि तीर्थ - श्रीपादराय जी से होने पर भी व्यासराय जी और पुरंदरसदास ने उसे उत्कृष्ट बनाया। दासकूट परंपरा को आगे बढाने का श्रेय पुरंदरदास जी को ही जाता है। इनकी रचनाओं की प्रौढिमा देखकर श्री व्यासराय जी ने इनकी रचनाओं को 'पुरंदरोपनिषत्त' नाम दिया था। गगनम् गगनाकारम्, सागरम् सागरोपमम् – उक्ति की तरह हरिदास पुरंदरदास जी की तुलना करने के लिए कोई दूसरे हरिदास का जन्म अभी तक नहीं हुआ है।

पुरंदरदास जी के योगदान से दास साहित्य समृद्ध बन पडा है। कर्नाटक संगीत और दास साहित्य में इनकी देन अतुलनीय है। इन्होंने विष्णु की दास्य भक्ति को उत्तुंग तक पहुँचाया है| दक्षिण भारत में भक्ति आंदोलन के प्रबल हस्ताक्षर के रूप में पुरंदरदास जी अडिग खडे हैं। इनके कीर्तनों के गायन में जो खुशी, भक्ति, एकाग्रता प्राप्त होती है, इसका लाभ पामर से लेकर पंडित तक उठा रहे हैं। हरिदास परंपरा में पुरंदरदास का नाम सूर्य की भाँति हमेशा – हमेशा के लिए चमकता रहेगा।

आधार ग्रंथ:

1) पुरंदरदासरु – वि. सीतारामय्या
2) कन्नड साहित्य चरित्रे – रं श्री. मुगली
3) श्री पुरंदरदासरु मत्तु श्री हरिदास परंपरे - वरदेंद्र मुंडेद
4) https://vijaykarnataka.com/news/chikkamagaluru/purandaradasas-native-araga/articleshow/65216228.cms/
5) http://hdl.handle.net/10603/83134
6) wikipedia

****